दृष्टि The Vision

drishti

Drishti Mentorship Program Mains-2023

ESSAY-9

निर्धारित समय: 3 घंटे
Time allowed: 3 Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

Name: Jatin Kumar **Mobile Number:**

Medium (English/Hindi): Hindi **Email:**

Center & Date: Online – 16.08.2023 **UPSC Roll No.: 6307371**

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Answer Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Answer Booklet must be clearly struck off.

	Essay Topic No.	Marks
Section-A		63
Section-B		65
(Grand Total) →		128

[signature] 11/45

Evaluator (Signature)

Reviewer (Signature)

Feedback

1. Context Proficiency
2. Introduction Proficiency
3. Content Proficiency
4. Language/Flow
5. Conclusion Proficiency
6. Presentation Proficiency

प्रिय अभ्यर्थी :-

=> फीडबैक के उपरोक्त सभी दक्षता सम्बंधी पक्ष के संदर्भ में प्रयास सराहनीय है।

=> निरन्तर अभ्यास करते रहें।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

ESSAY - 09

UPSC

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

4. कम्फर्ट जोन एक खूबसूरत जगह है लेकिन वहां कभी कुछ नहीं उगता।

बुद्ध, लुम्बिनी के राजकुमार थे। प्रारम्भिक जीवन में वे सांसारिक दुःख एवं अन्य कष्टों से विलग रहे, एक खूबसूरत जीवन व्यतीत करते रहे। समय को कुछ और ही मंजूर था। एक रात वह अपने घोड़े कंथक पर सवार होकर सांसारिक सुखों को त्यागकर वास्तविक सत्य की तलाश में निकल गये।

यदि बुद्ध सदैव अपने राजमहल तक सीमित रहते एवं अपने कम्फर्ट जोन से बाहर नहीं निकलते तो विश्व को बौद्ध धर्म से साक्षात्कार नहीं मिलता, बुद्ध के अष्टांगिक मार्गों की संकल्पना कभी सामने ही ना आ पाती।

अतः यह कहना उचित ही है कि जब व्यक्ति अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकलकर अपनी शक्तियों की पहचान करने में सक्षम हो जाता है तो वह समाज एवं विश्व को अतुल्य योगदान दे पाता है। अन्यथा तो एक बंजर जमीन पर कभी कुछ नहीं उग पायेगा।

प्रसंग के माध्यम से शुरुआत अच्छी है

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

1526 में जब बाबर ने भारतीय उपमहाद्वीप पर आक्रमण किया तब उसने भी अपने कम्फर्ट जोन मध्य एशिया से बाहर निकलकर अपनी सल्तनत विस्तार की परिकल्पना की थी। हालांकि इस हेतु उसे नवीन सैन्य तकनीकों एवं धन की आवश्यकता पड़ी।

इसी तरह महाराणा प्रताप ने मुगलों के सान्निध्य को स्वीकार नहीं किया। यदि वह मुगल आधिपत्य स्वीकार कर लेते हैं तो उन्हें राजसी सुख प्राप्ति होती है किन्तु मुगलों के विरुद्ध स्वयं के कम्फर्ट जोन से बाहर निकलकर निरन्तर युद्ध लड़ने के क्रम में ही वह महाराणा प्रताप के नाम से जाने जाते हैं।

अंग्रेजों ने भी इंग्लैण्ड से विलग जलवायु प्रदेशों में अपने डेरे जमाये जो उनके कम्फर्ट जोन से बाहर था। भारतीय राजाओं ने उनका सहयोग भी किया अर्थात् कुछ भारतीय राजा अपना कम्फर्ट जोन नहीं छोड़ना चाहते थे, भले ही उन्हें देश प्रेम से समझौता करना पड़े। भारतीय उपमहाद्वीप ऐसे ही अनेक आक्रमणों एवं राज्य-सहायताओं का गवाह रहा है।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

भौगोलिक परिदृश्य में डार्विन ने जातियों के उद्विकास सम्बन्धी सिद्धान्त को प्रतिपादित किया। उनका मानना था कि प्रजातियों जितनी अधिक विविधता वाली होंगी, उतनी ही उत्तरजीविता की संभावना अधिक होगी। अर्थात् जब तक प्रजातियां अपने कम्फर्ट जोन से बाहर नहीं निकलेंगी तब तक उनके समापन का खतरा मंडराता ही रहेगा।

इस कारण प्रजातियां अत्यधिक प्रवास करती हैं एवं क्षेत्रीय विविधता का जन्म होता है। मानव में भी प्रवासीय गुण पाया जाता है। प्रवास की व्यवस्था से ही मानव अपने लिए बेहतर संसाधनों की खोज एवं उनका उपयोग कर पाता है।

प्रवास के अनेक नकारात्मक परिणाम भी सामने आते हैं जिनमें अति-जनसंख्या, संसाधनों का अतिदोहन, जनांकिकीय पुनर्वितरण आदि प्रमुख हैं। अतः कम्फर्ट जोन से बाहर निकलने पर जहां एक ओर समाजों का आपसी मिश्रण होता है वहीं सामाजिक विविधता पर प्रश्नचिह्न लगता है।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

हमारे समाज में धर्म का महत्वपूर्ण स्थान है किन्तु धर्म की विभिन्न कुरीतियों को समाप्त करने के लिए भी हमें एक स्थापित व्यवस्था के बाहर सोचने एवं आचरण करने की आवश्यकता है। जैसे - सती प्रथा का उन्मूलन, राजा राममोहन राय के प्रयासों से तभी संभव हो पाया जब उन्होंने एक नजर बाहर की ओर देखा। 1829

भौतिकतावादी प्रवृत्ति एवं विलासिता पूर्ण जीवन के कारण मानव की सोच पर निजता का प्रभाव अधिक है एवं वह मानववादी व समाजवादी सोच से परे हो चुका है। इसे समाप्त कर परोपकार एवं सामाजिक बंधुत्व जैसे सामाजिक लक्षणों की स्थापना के लिए हमें अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकलने की आवश्यकता है।

पितृसत्तात्मकता की एक सुस्थापित व्यवस्था का उन्मूलन भी आउट ऑफ द बॉक्स सोच द्वारा ही संभव है। समाज के गुणधर्मों एवं मानव को मानव समझने के लिए कम्फर्ट को त्यागकर हृदय को एकाकार करने पर बल देना चाहिए। इससे बंजर भूमि भी उपजाऊ हो सकती है।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में पश्चिमी सीमा पर पाकिस्तान ने आतंक को हथियार बनाया है। भारत के अभिन्न हिस्से जम्मू कश्मीर को गैर- अधिकृत तरीके से कब्जे में लेना भारत की सम्प्रभुता को कचोटता है। जम्मू-कश्मीर के निवासी इस कारण भारतीय विकास की मूल-धारा से जुड़ नहीं पाये।

अनु. 370 को हटाने का फैसला निश्चित ही राजनैतिक इच्छाशक्ति का उत्कृष्ट नमूना था जिसने कश्मीरियों को शेष भारत से एकाकार कर दिया है। यह अपने कश्मीर जोन में रहकर तारीख पर तारीख देने से संभव नहीं हो पाता।

इसके परिणामस्वरूप जम्मू-कश्मीर में 35000 करोड़ से अधिक के विकास कार्य मंजूर हुए हैं एवं बनिहाल-काजीगुंड जैसी परिवहन परियोजनाएं घाटी के विकास की कहानी कह रही हैं। पाकिस्तान ने हालांकि इस मुद्दे को विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर उठाने की कोशिश की जिसमें उसका साथ टर्की जैसे ने दिया।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

पाकिस्तान अपने आंतरिक मामलों से उबर पाने में सक्षम नहीं है। हाल में ही वह अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से ऋण की मांग करता नजर आया। धर्म के आधार पर स्थापित राष्ट्र जैसे - अरब देश आदि स्वयं को विकसित करने में असफल रहे हैं। अर्थात् अपने कम्फर्ट जोन में रहने भर से ये विकास की राह पर नहीं आ सकते।

यथास्थिति बनाये रखने की उ. कोरियाई नीति ने उ. कोरिया को शेष विश्व से अलग-थलग कर दिया है। लोकतांत्रिक विश्व में तानाशाही सरकारें विकल्प प्रदान करने में सदैव ही विफल रही है।

विश्व बैंक जैसे संगठन पश्चिम के पक्षधर माने जाते रहे हैं। ऐसी ही हालत संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन एवं अन्तराष्ट्रीय मौद्रिक संगठन की है। यदि इनमें समयानुरूप परिवर्तन नहीं किया गया तो इनकी प्रासंगिकता पर प्रश्न उठना लाजमी है। आर्थिक विकास को पटरी पर लाने के लिए वर्तमान कम्फर्ट जोन से बाहर सोचना पड़ेगा।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

आर्थिक परिदृश्य के बदलते माहौल में व्यक्ति नवीन अर्थव्यवस्था स्वरूपों को देखता रहा है जैसे - पूंजीवादी, समाजवादी व मिश्रित। वर्तमान में गिग अर्थव्यवस्था एवं मून लाइटिंग जैसे नवीन प्रयोगों का बोलबाला है एवं लोग अपने दैनिक जीवन में समयानुरूप इन्हें अपना रहे हैं।

कौशल विकास की कमी के कारण हालांकि भारतीय जनांकिकीय लाभांश का पूर्ण दोहन संभव नहीं हो पा रहा है किन्तु नये कार्यक्रमों यथा - प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना द्वारा इस कमी को पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है।

कम्फर्ट जोन से बाहर निकलकर रोजगार करने के एवज में पारिवारिक सम्बन्धों का ह्रास, नैतिक दुविधाएं, शारीरिक व मानसिक बीमारियों आदि का सामना करना पड़ रहा है। इस हेतु डिजिटल अर्थव्यवस्था एवं ई-गवर्नेंस के प्रयोग तथा अनेक वैज्ञानिक तकनीकों द्वारा लोगों के रोजगार अवसर बढ़ाने एवं आय वृद्धि की पहल की जा रही है।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

हाल के विश्व में मोबाइल, कम्प्यूटर आदि का प्रयोग आसमान छू रहा है। भारत में 1 बिलीयन से भी अधिक मोबाइल फोन उपयोगकर्ता हो चुके हैं। युवा भी मोबाइल पर अधिक समय का ह्रास कर रहे हैं जिससे सामाजिक पूँजी का ह्रास हो रहा है एवं ये लोग विकासीय गतिविधियों में अपना योगदान देने में असमर्थ हैं।

मोबाइल की काल्पनिक दुनिया से बाहर निकलकर हमें वास्तविक जीवन की समस्याओं हेतु इन्टरनेट के प्रयोग की आवश्यकता है। मोबाइल के अति-उपयोग से शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

भारतीय वैज्ञानिक यदि अपने कम्फर्ट जोन से बाहर निकलकर कार्य नहीं करते तो अल्प समयावधि में ही चन्द्रयान-3 का प्रक्षेपण नहीं हो पाता। इसी तरह UNESCO ने विद्यालयों में मोबाइल बैन की अनुशंसा की है जिससे विद्यार्थियों का बहुमुखी विकास संभव हो सके। हालांकि मोबाइल के विकास के साथ इसके पर्यावरणीय खतरे भी हाथ में हाथ डाले हुए हैं।

good

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

मानव स्वयं को पर्यावरण का सर्वेसर्वा मानकर अपने अनुसार उपयोग करने में लगा हुआ है जिसका परिणाम पर्यावरण अवनयन के रूप में देखने को मिला है। मानव स्वयं के कम्फर्ट हेतु निर्वनीकरण कर रहा है जिससे पर्यावरणीय वनों में कमी देखी गयी है (ग्लोबल फोरेस्ट वाच रिपोर्ट)।

इस कम्फर्ट जोन से बाहर निकलकर पर्यावरण परिरक्षण, संरक्षण करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की LiFE (पर्यावरण के अनुसार जीवन शैली) अवधारणा के अनुसार जीवन व्यतीत करने की आवश्यकता है।

इससे संधारणीय विकास को प्रोत्साहन मिलेगा एवं पर्यावरणीय संसाधन दीर्घकाल तक संरक्षित रह सकेंगे। इस दिशा में पर्यावरण के साथ कदम मिलाकर चलने का काम अनुसूचित जनजातियों एवं बिश्नोई समाज ने किया है। ये लोग अपना नैतिक दायित्व समझकर पर्यावरण संरक्षण में लगे हैं।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

स्वयं के निजी लाभों की कल्पना से बाहर निकलकर समाज के प्रति स्वयं के उत्तरदायित्व एवं कर्त्तव्यों का पालन करने की आवश्यकता है। यदि व्यक्ति स्वयं ही जवाबदेह होगा तो वह कम्फर्ट ज़ोन से अधिक देश एवं समाज को प्रोत्साहन देगा।

भारत का 'वसुधैव: कुटुम्बकम' एवं 'सर्वजन हिताय - सर्वजन सुखाय' जैसे वाक्य यह सुनिश्चित करते हैं कि व्यक्ति को सदैव नैतिकता को अधिक अवसर देने चाहिए एवं भौतिकता को स्वयं पर हावी नहीं होने दिया जाये।

'एक पृथ्वी: एक परिवार: एक स्वास्थ्य' की धारणा मन में लेकर निजी हितों पर सार्वजनिक हितों को वरीयता देनी चाहिए। मानव की आधुनिक तकनीकी शिक्षा का संयुग्मन नैतिक शिक्षा से अत्यन्त जरूरी है अन्यथा नैतिकता के अभाव में शिक्षित लादेन बनने से समाज का अहित ही होगा।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

महात्मा गाँधी के अनुसार कुछ भी शाश्वत नहीं है। हमें अपने धर्म पर भी प्रश्न करते रहना चाहिए ताकि धर्म में भी समयानुरूप सुधार होते रहें। मानव का तार्किक, वैज्ञानिक एवं नैतिक होना अत्यावश्यक है।

कम्फर्ट जोन में रहने से व्यक्ति अपनी विकास की उच्चतम अवस्था को प्राप्त नहीं कर पाता। वह समाज में योगदान देने में असमर्थ रहता है। अतः आवश्यक है कि वह पूर्णरूपेण स्वयं के प्रति समर्पित रहे ताकि अपनी योग्यताओं एवं कौशल का विकास करे जिससे अन्ततः समाज व देश का भला हो।

घर से बाहर निकले बिना वैश्विक परिस्थितियों, सामाजिक दुखों, पीड़ा एवं कष्ट का संज्ञान नहीं लिया जा सकता। स्टीफन हॉकिंग के शब्दों में -

"कोई व्यक्ति यदि शारीरिक रूप से अक्षम है तो वह मानसिक रूप से अक्षम नहीं हो सकता।"

63/125

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

Essay

(6) अधिकार वह नहीं है जो कोई आपको देता है, ये वह हैं जिसे आपसे कोई छीन नहीं सकता।

"अधिकारों के बिना सजीव व्यक्ति, निर्जीव-सम है।"

परिचय भाग अच्छा है

उपरोक्त पंक्तियां अधिकारों की महत्ता को रेखांकित करती हैं। पुरुष-स्त्री एवं पशु-पक्षी के मध्य विभेद का एक महत्वपूर्ण आधार इन्हें प्राप्त अधिकार हैं। अधिकारों के बल पर ही मानव स्वयं को अन्य जीवों से श्रेष्ठतर साबित करने में सफल साबित हुआ है।

अरस्तू के अनुसार मानव व पशु में भावनात्मक स्तर पर विभेद होता है। भावनाओं का जीवन में प्रयोग अधिकारों की नींव पर होता है अन्यथा भावनाएं कोरा स्वप्न ही हैं। अधिकारों में भी उन्हीं अधिकारों की मान्यता है जिन्हें व्यक्ति से कोई छीन नहीं सकता क्योंकि छिन सकने वाले अधिकारों के बारे में तो कभी सुनिश्चित नहीं हुआ जा सकता है।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

वैदिक काल से ही अधिकारो में विभेद देखने को मिला है। प्रकृति ने तो पुरुष व स्त्री को समान बनाया है किन्तु पुरुष की स्वयं को श्रेष्ठतर साबित करने की प्रवृत्ति ने महिलाओं को पुरुष-सम अधिकारों से वंचित रखा। जैसे वैदिक काल में घोषा, लोपामुद्रा आदि कुछ स्त्रियों के नाम ही सम्मुख आते हैं।

उत्तरवैदिक काल में भी सभा व समितियों के महत्व कम होने पर महिलाओं का सामाजिक स्थान कुछ नीचे गिरा। इस समय शूद्रों को भी अधिकारों की पूर्ण प्राप्ति नहीं थी। अर्थात् अधिकारों की इस दौड़ में कुछ लोग आगे तो कुछ दिखाई पड़े।

समयान्तर में लोगों ने अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष किया एवं समान अधिकारों की गारंटी सुनिश्चित करवाई जैसे - फ्रांस, अमेरिका की क्रांति। इसी से भारतीय परिदृश्य में भी शूद्र एवं महिलाओं को भी समान अधिकारों की प्राप्ति हुई किन्तु फिर भी धरातलीय विषमता विद्यमान ही है।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

आधुनिक राजनैतिक सीमाओं ने भौगोलिक क्षेत्रों का विभाजन किया है। इससे क्षेत्रीय विविधताएं पैदा हुई हैं। सीमाओं के अनुरूप ही अधिकारों का निर्धारण होता है। यह राजनीतिक सत्ता द्वारा निर्धारित होते हैं। जैसे - भारत एवं पाकिस्तान में लोगों के अधिकार।

भौगोलिक सीमाओं के बावजूद कुछ अधिकार ऐसे हैं जो मानव को जन्म से ही प्राप्त होते हैं। ये मानवाधिकार कहलाते हैं। जैसे - जीवन का अधिकार आदि। वर्षा की अधिकता एवं न्यूनता पर कृषक को फसल चुनाव का अधिकार है, वह जीवन-निर्वाह एवं गहन खेती कर सकता है।

आधुनिक विश्व में सभी देश जलवायवीय एवं पर्यावरणीय रूप से जुड़े हुए हैं। अर्थात् एक देश के परिवर्तनों का अन्य देश पर प्रभाव पड़ता है जिससे लोगों एवं सरकारों के असीमित अधिकारों पर मानव की भलाई के लिए कुछ सकारात्मक प्रतिबन्ध, राजनीतिक गठबंधनों द्वारा आरोपित किए जाते हैं।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

राजनीतिक व्यवस्था में वर्तमान लोकतांत्रिक सरकारें ही श्रेष्ठ समझी जाती हैं। लोकतंत्र में व्यक्ति के मानवाधिकारों के साथ-साथ अन्य अधिकारों की सुनिश्चितता भी की जाती है। इन अधिकारों पर हालांकि कुछ सकारात्मक प्रतिबन्ध लगाये जा सकते हैं किन्तु इन्हें अयमय छीनने की मनाही है।

भारतीय लोकतंत्र (संविधान) के भाग III में नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता, शोषण के विरुद्ध आदि अधिकार प्रदान किये गये हैं। इन अधिकारों के द्वारा व्यक्ति को विकास के अवसर मिलते हैं जिससे वह देश की प्रगति में योगदान दे सके।

विशेष परिस्थितियों में राष्ट्रीय आपातकाल में राष्ट्रपति द्वारा कुछ अधिकार छीने जा सकते हैं। अर्थात् कोई भी अधिकार पूर्णरूपेण निरपेक्ष प्रदत्त नहीं है बल्कि सापेक्षतः दृष्टान्त में ही कम या अधिक किया जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ भी समय-समय पर मानवाधिकारों की सुनिश्चितता हेतु अग्रणी भूमिका निभाती हैं जैसे- संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग।

Good

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में सभी देशों को शांति से शासन व्यवस्था को संचालित करने, अपने आंतरिक मामलों का प्रबन्धन करने एवं सह-अस्तित्व बनाये रखने का अधिकार है। राज्यों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अन्य किसी राज्य एवं मानव के अधिकारों पर मनमाना हस्तक्षेप ना करें।

प्रत्येक राष्ट्र, ध्रुवीकरण की राजनीति से दूर निष्पक्षता अपना सकता है एवं स्वयं के विकास को सुनिश्चित कर सकता है। भारत जैसे -देश पंचशील सिद्धान्तों की पालना करते हैं। भारत के लिए सभी राष्ट्र एक समान हैं।

वैश्विक शरणार्थी समस्या ने आज सभी लोगों व राष्ट्रों का ध्यान खींचा है। व्यक्ति के जीवन के अधिकार को मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा ने भी स्थान दिया है। भारत ने रोहिंग्या शरणार्थियों को स्थान देकर अपना कर्तव्यपालन किया है, नवीन वैज्ञानिक तकनीकों से सीमा पार अधिकारों की सुनिश्चितता को बल मिला है।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

विज्ञान ने नित-नवीन प्रगति कर मानव के अधिकारों की पूर्ति में अत्यधिक योगदान दिया है। भारत में अनुसंधान के अधिकार को प्रदान करने के लिए अटल टिंकरिंग लैब्स की स्थापना की गयी। वैज्ञानिक गतिविधियों के प्रोत्साहन के लिए STEM रणनीति पर कार्य किया जा रहा है।

अनुराधा भसीन एवं फहीमा शिरीन मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने इन्टरनेट को मूल अधिकार बना दिया। इससे मानव को विकास के नये अवसर प्राप्त हुए हैं एवं नवीन तकनीकों, खोजों को प्रोत्साहन मिला है।

विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति से व्यक्ति की ऑनलाइन उपस्थिति बढ़ी है जिससे फेक न्यूज, डिजिटल शोषण की घटनाएँ बढ़ी हैं। अधिकारों पर कुछ सीमा तक प्रतिबन्ध लगाने का अधिकार सरकारों ने अपने पास रखा है। विज्ञान के बढ़ते प्रभाव ने मानव को पर्यावरण के प्रति असंवेदनशील बना दिया है।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृप्या इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

मद्रास उच्च न्यायालय ने हाल ही में अपने निर्णय में प्रकृति को एक जीवित जीव माना है जिसके समान अधिकार हैं। मानव ने प्रकृति का शोषण अपने विकास के नाम पर किया है किन्तु पर्यावरणीय अधिकारों की अवमानना की है।

नदी को अपनी धारा-अनुरूप बहने का अधिकार है जिसमें हम नदी-जोड़ो परियोजना के माध्यम से अवरोध कर रहे हैं। यह भविष्य के किसी खतरे की चेतावनी हो सकती है। प्रकृति एवं मानव दोनों ही पर्यावरण के अहम भाग हैं। समान उपयोग के सिद्धान्त के आधार पर पर्यावरणीय अधिकारों की रक्षा न केवल होनी चाहिए बल्कि दिखनी भी चाहिए।

प्रकृति एवं मानव एक रथ के दो पहियों की भाँति एक समान दर से गति करेंगे तो विकास की गति भी तीव्र होगी। इसके लिए प्रकृति के अधिकारों को धन एवं वृद्धि के ऊपर प्राथमिकता देनी चाहिए।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

मानव को स्वयं की उन्नति करने, रोजगार प्राप्त करने, कौशल विकास, शिक्षा प्राप्ति आदि का अधिकार प्राप्त है। सरकारें भी मानवीय विकास को प्रोत्साहन देती हैं एवं मानवीय पूँजी का अत्यधिक महत्व समझती हैं।

मानवीय शिक्षा एवं ज्ञान आन्तरिक है, इसे कोई छीन नहीं सकता। मानव अपने कौशल द्वारा धनार्जन करता है जिस पर सरकार कर लगाती है जिसका उद्देश्य असमानताएँ समाप्त करना होता है। अर्थात् अनन्त अधिकारों की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाया जाता है।

मानव को अपने विकास के लिए प्रयास करने ही चाहिए किन्तु अन्य किसी के अधिकारों की वेदिका पर नहीं। सभी को समान मानवाधिकार प्राप्त हैं अतः सभी पर समान प्रतिबन्ध भी लगाये जा सकते हैं। हम सब का यही नैतिक कर्तव्य है कि अमीर-गरीब की चौड़ी होती खाई को पाटने एवं इंडिया व भारत के अन्तर को खत्म करने के लिए अपने अधिकारों का प्रयोग करें।

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए!
Candidates must not write on this margin.

सामाजिक अस्पृश्यता की समाप्ति हालांकि अनु. 17 द्वारा प्रस्तावित है किन्तु विधायी से अधिक सामाजिक अवधारणा है जिसे समाप्त करना व्यक्ति मात्र का नैतिक दायित्व है। व्यक्ति के नैतिक मूल्यों के विकास का अधिकार सब के पास है किन्तु मूल्यों में नकारात्मकता लाकर सामाजिक विखण्डन नहीं।

बुजुर्गों एवं माता-पिता की सेवा न केवल नैतिक दायित्व हैं बल्कि अधिकार स्वरूप इसका आचरण करने पर हमें एक समावेशी समाज की प्राप्ति होती है। खुलापना, निष्पक्षता, सत्यनिष्ठा व ईमानदारी जैसे गुण यदि मानव मात्र में विद्यमान हैं तो कर्त्तव्य व अधिकारों में विभेद नहीं होगा।

सबरीमाला में प्रवेश का मसला हो अथवा अनु. 377 के विरुद्ध न्यायालय का दृष्टिकोण, व्यक्ति के नैतिक अधिकारों को सर्वमान्य घोषित करते हैं। अभी LGBTQ समुदाय को समलैंगिक विवाह की अनुमति के लिए प्रयास जारी हैं। एक समावेशी समाज के लिए यह अपेक्षित है कि सभी लोगों के अधिकार सुनिश्चित हों।

अच्छा प्रयास

(Please do not write anything except the question number is this space)
कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें!

UPSC

Answer Questions in NOT MORE THAN the Word Limit specified for each in the Parenthesis.
Content of the Question is more important than length.
(Specimen Answer Booklet - For Practice Purpose Only)

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए! Candidates must not write on this margin.

निष्कर्षात्मक रूप में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था में कोई भी अधिकार असीमित नहीं है, उस पर युक्त-युक्त प्रतिबंध आरोपित किये जा सकते हैं। अधिकारों की सीमानुरूप विविधता पायी जाती हैं। मानवाधिकारों की मान्यता सार्वभौमिक है।

परिवर्तनशील समाज में पशु-पक्षी, पेड़-पौधे सभी के अधिकारों की मान्यता अवश्यम्भावी है, इसी से एक समावेशी समाज की संकल्पना सिद्ध होगी और सामाजिक न्याय की सुनिश्चितता होगी। मानव को एक मस्तिष्कवादी होने के नाते सभी को समान अधिकार प्रदान करने चाहिए।

ऐसे अधिकारों को मान्यता देने की आवश्यकता है जिन पर किसी व्यक्ति का विकास निर्भर करता है। जिनकी अनुपस्थिति में व्यक्ति स्वयं का सर्वांगीण विकास नहीं कर पायेगा। इन अधिकारों को छीना जाना भी व्यक्ति के विकास पर कुठाराघात ही होगा।

⇒ निबंध लेखन में तार्किकता एवं विश्लेषणात्मक क्षमता अच्छी है

V. Good.

65/125